८. हिरणी

– रत्नकुमार सांभरिया

पूरक पठन

पौने छह फीट लंबा कद । पतला-सा सुता हुआ शरीर । गेहुँआ रंग । लंबी गर्दन । गले में काले डोरों की रुद्राक्ष गुँथी माला । दोनों कान छिदे हुए । कान के इन छिद्रों से हवा आए-जाए । सिर पर बँधे तौलिया के फेंटे तले कंधों पर गिरती सुनहरी बालों की रूखी-सूखी लटें । दबे चेहरे पर कुन्ही (मुर्रा) भैंस के घुंडी खाए सींगों-सी छल्ला मूँछें । मैल चढ़े पैरों तले हवाई चप्पलें । वह चौखाना की बिन धुली लुंगी बाँधे था । ऊपर बिना प्रेस की मुड़ी-मुड़ी-सी कमीज थी । उसके दाएँ हाथ पर लछीनाथ सपेरा गुदा हुआ था । वह देखते ही घुमक्कड़ जनजाति की इकाई लगता था ।

सूरज दो-तीन बाँस ऊपर चढ़ आया था । मई की चटक धूप सुबह से ही अपने तेवर दिखाने लगी थी । फटे तहमद के झरोखों से छिटककर अंदर आती धूप डेरे में बिखरी हुई थी । लछीनाथ ने अंदर आ गई धूप की ओर टकटकी बाँधकर देखा ।

भोर !

पूर्वांचल से उठती भानूदय की लालिमा के आगमन पर अवनि पलक-पावड़ा बिछाए थी । प्रभात का सुनहरा समीर, जल की बूँद-बूँद, धरा के कण-कण, पेड़-पौधों के पात-पात और बेल-वल्लरी के रोएँ-रोएँ में बसा था ।

लछीनाथ को सुबह मुँह अँधेरे उठने की बान-सी पड़ी हुई थी । उसके बाप सरूपनाथ की भी यही आदत थी । प्रातः उठना उसका संस्कार था । शिशु सूर्य के मखमली उजास में उसकी नजरें एक अप्रत्याशित देखने को ठहर गई थीं ।

उसके पास एक शिकारी श्वान था । सूत की रस्सी-सा सुता शरीर। दंतैल । लंबा मुँह । लंबी पूँछ । पीठ-पेट एक । दोनों बगल पसलियाँ खड़ी थीं, बाँस की खप्पचियों-सी । उनको गिन लो एक-एक । नाम था शेरू ।

उसका वही श्वान शेरू, मृग शावक को घेरे हुए बैठा था । बच्चा भागने की चेष्टा करता, कुत्ता दाढ़ें निपोरकर उसमें भय भर देता था । खूँखार कुत्ते के सामने मासूम बच्चे का समूचा शरीर पवन में हिलते पत्ते की तरह काँप रहा था । हारे को हरिनाम । बेचारे शिशु ने जैसे मौत को अपनी नियति मान लिया था ।

लछीनाथ ने अपने स्वामिभक्त कुत्ते को दाद दी । मेरा शेरू शातिर शिकारी तो है ही, वफादारी भी खूब है इसमें ।

उसने फाहे-जैसे मुलायम हिरण के उस बच्चे की ओर काक-दृष्टि से ऐसे देखा मानो वह उसके मनपसंद भोजन का निमित्त हो । उसके अंतस से भूख की

परिचय

जन्म : ६ जनवरी १९५६ जयपुर (राजस्थान)

परिचय : रत्नकुमार सांभरिया जी ने लघुकथा, कहानी, एकांकी, अनुवाद आदि विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। आपकी रचनाएँ प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

प्रमुख कृतियाँ : काल तथा अन्य कहानियाँ, हुकुम की दुग्गी आदि (कहानी संग्रह), समाज की नाक (एकांकी संग्रह), प्रतिनिधि लघुकथा शतक (लघुकथा संग्रह), डॉ. आंबेडकर : एक प्रेरक जीवनी का अरबी और सिंधी भाषा में अनुवाद ।

गद्य संबंधी

चित्रात्मक कहानी : जीवन की किसी घटना के रोचक, प्रवाही वर्णन को कहानी कहते हैं । इसमें पात्र अथवा चरित्र का अत्यधिक महत्त्व होता है । कहानी कहते या पढ़ते समय जब उस घटना/प्रसंग का चित्र उभर आता है तो वहा चित्रात्मक कहानी होती है ।

प्रस्तुत कहानी में सांभरिया जी ने कठोर हृदय की सहृदयता और अपने प्रति किए गए उपकार के प्रतिदान का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है ।

भख का भपारा-सा निकला । यदि मन में लालच हो तो उतावली लाजिमी है । शिकार छूट न जाए, प्रमुदित हुआ वह भागा-भागा गया । झोंपड़ी की बाती में खुँसा छुरा उसने निकाल लिया था । वह छुरा लिए शावक के पास आ बैठा था ।

शिकारी और शिकार । घोड़ा और घास । ना घोड़ा घास से यारी निभा सके, ना शिकारी शिकार को नूर सके । लछीनाथ ने शावक की गर्दन पकड़ कर खंजर सँभाला ।

निरीह शावक । खुँटियाते सींग । आकाश देखते कान । मींह-मींह सुरमई नयन । भूरे रंग पर सफेद छिटके । चाम के भीतर दसेक किलो की देह । रोम-रोम बेचारगी । तन-बदन बेसहारगी । छुरा का अर्थ पक्षी का चीकला (बच्चा) भी जानता है, वह तो मृग-शावक था । उसने आँखें मूँद ली थीं और अपनी इहलीला समाप्त होने के डर से लंबी-लंबी साँसें लेने लगा था ।

लड़कपन का झोंक था । हिरणी का यह शावक इधर-उधर मुँह मारता, कूदता-फाँदता, हुमकता, हँसता-खेलता, कुलाँचे भरता डेरों की ओर आ निकला था । कुत्ते ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया था । रात का तीसरा प्रहर बीत रहा था । उसी समय से खेत में हिरणी ममता के वशीभूत खड़ी थी । इधर उसका शावक कुत्ते के सामने अवश था ।

ऊपर की उस खेत से किसी जानवर के खों-खों कर धाँसने की ध्वनि सुनाई दी । ध्वनि में गिड़गिड़ाहट जैसा दयनीय पुट था । वह क्रूरता की पराकाष्ठा का ध्यान अपनी ओर खींच ले गई थी ।

शावक की गर्दन से छुरा हटा कर लछीनाथ उठ खड़ा हुआ था । उसने आवाज की ओर कनखी से निहारा । खेत परती पड़ा था । खेत में जहाँ-जहाँ कंटकमय झाड़ियाँ थीं । सीना सवानी लंबी-लंबी सूखी घास खड़ी हुई थी । उस घास के बीच हिरणी जैसा कोई जीव उसे खड़ा दिखाई दिया । जब तक साँस, तब तक आस । हिरणी ने खों-खों-खों करते जैसे फिर आप-आप की, मानो कहती हो 'यह बच्चा मेरी वंशबेल है, इसे मत मारो । मैं ढलती उम्र हूँ । आप मेरा गला रेत लें ।'

लछीनाथ ने गौर से देखा । हिरणी ही थी । वह इस विश्वास से बँधता चला गया था कि हो न हो यह उसी हिरणी का बच्चा है । वह वहाँ खड़ी इसके प्राणों की भीख मुझसे माँग रही है । एकाएक उसे तीन बरस पहले का वह दिन स्मरण हो आया था । ऊपर के उन्हीं खेतों से आया एक भेड़िया झोंपड़ी के सामने सोई उसकी तीन महीने की बच्ची को उठाकर जंगल में भाग गया था । भेड़िये की खोज लेते उसकी खोह में बच्ची तो मिल गई थी लेकिन उसे बचाया नहीं जा सका था ।

बच्ची की माँ की हालत महीनों पागल जैसी रही थी । माँ हिरणी...।

पठनीय

ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित कोई लोककथा पढ़िए ।

संभाषणीय

पालतू जानवरों की देखभाल संबंधी चर्चा कीजिए ।

मौलिक सृजन

'जंगल में रहने वाले पशु प्रकृति की गोद में ही स्वच्छंदता से पलते हैं', इसपर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

उसका हृदय विदीर्ण हो आया था । उसने छुरा वहीं जमीन में गाड़ दिया था । स्नेहिल हाथों उसने बच्चे को गोदी में उठा लिया था । वह कदम-दर-कदम उधर बढ़ता चला गया, जहाँ उसकी माँ खड़ी हुई थी । उधर शावक को लेकर लछीनाथ खेत की ओर बढ़ा था और इधर श्वान छुरे को मुँह में भर कर झोंपड़ी की ओर चला आया था ।

बालक का जी माँ की आत्मा में बसता है । जिस माँ का बच्चा मौत के मुँह में हो, उसे अमन कहाँ । हिरणी की साँसें जैसे उसके फेफड़ों और पसलियों में ही सिमटी हुई थीं । ममता की अदृश्य डोर से बँधी हिरणी वहाँ आड़ी देकर खड़ी हुई थी । बच्चे को लेकर लछीनाथ खेत में पहुँच गया था। तृण-सागर में खड़ी हिरणी कनौतियाँ उठाए एक साँस उधर ही देखे जाती थी । एकदम उदास, हताश, शोक-संतप्त-सी, क्लांत । मानो वह शरीरी नहीं, स्थापित संगमरमरी हो ।

अकस्मात लछीनाथ की निगाहें दूसरी ओर घूमीं । वह सहमकर रह गया था । पाँच-छह शृंगालों का एक झुंड हिरणी से थोड़ी दूरी बनाए खड़ा था । सियार यह उम्मीद बाँधे थे कि मृतप्राय है हिरणी, उसकी साँसें टूट जाएँगी और उनका भोग-भक्षण होगा । लछीनाथ ने धरती पर पाँव की धमक के साथ उनको हटकार दिया था । गीदड़ को कायर का पर्याय कहा जाता है । धमक, आदमी की रूह नजर पड़ते ही वे सब-के-सब सिर पर पैर रख कर भाग खड़े हुए थे ।

❊ लछीनाथ ने बच्चा हिरणी के पास छोड़ दिया था । बुझते दीपक में तेल डालते ही उसकी लौ फिर प्रकाशमान होने लगती है, सुध-बुध खोई हिरणी में जैसे फिर जीवन-ज्योति प्रज्वलित होने लगी थी । वह चैतन्य और चौकस हो गई थी । जंगल विहरनी की आँखों से टप-टप दो-तीन बूँदें गिरीं । सर्द आँसुओं में अब वेदना नहीं, खुशी का भाव झलक रहा था । हिरणी ने लछीनाथ की ओर ऐसे देखा मानो वह कोई इनसान नहीं फरिश्ता हो । हिरणी ने बच्चे को दूसरी ओर अपनी बगल में ले लिया था और वहीं खड़ी रह गई थी । लछीनाथ को विस्मय हुआ । अपना टाबर पा जाने के बाद तो हिरणी को कुलाँचे मारते यहाँ से भाग खड़ा होना चाहिए था । यह तो खड़ी मेरी ओर ही लखे जाती है । ❊

जंगली जानवरों की भी अपनी बोली-भाषा, हक-हकूक हुआ करते हैं । कई बार यही बातें उनके बीच झगड़े-टंटों का हेतु बन जाया करती हैं। महीना पहले हरी घास की चूँट की तनिक-सी रार को लेकर दो हिरणी आपस में भिड़ गई थीं, सींग-सींग । क्रोध हर जीव में दुबका होता है और मौका पाते ही वह हिंसक हो जाता है । दोनों हिरणियों ने एक-दूसरी को मात देने के लिए अपनी जान फूँक दी थी । उस दिन की लड़ाई-भिड़ाई में

लेखनीय

'वनों पर सबसे पहला अधिकार पशुओं का' इस विषय पर चर्चा करते हुए अपना मत लिखिए ।

श्रवणीय

प्रकृति से संबंधित एक कविता सुनिए तथा उसका आशय सुनाइए ।

❊ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए ।

(१) कृति पूर्ण कीजिए ।

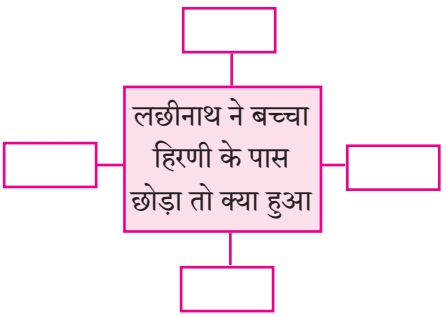

(२) 'क्रोध हर जीव में दुबका होता है', इसपर अपना मत लिखिए ।

इस हिरणी के एक सींग ने जगह छोड़ दी थी । सींग जड़ उखड़े पौधे की भाँति कई दिन हिलता रहा था । बीस-पच्चीस दिन बाद शनैः-शनैः फिर जड़ पकड़ने लगा था ।

हिरणी ने आव देखा न ताव, उस सींग पर अपने खुर का तीखा प्रहार कर उसे तोड़ पटका था । सहृदय को नाचीज की ओर से इनाम । अपने शावक को साथ लिए वह उल्लसित मन उछलती, कूदती, छलाँगें भरती घास-झाड़ियों में अंतर्धान हो गई थी ।

लछीनाथ की नजर धरती पर टूटे पड़े हिरणी के सींग पर गई । उठाते हुए उसे अपनी दिवंगत माँ याद हो आई थी । उनके घर किसी जमाने का हिरणी का सींग हुआ करता था । जब भी उनके डेरे उठते माँ अपने थैले में रखे उस सींग को हाथ में लिए चलती थी ।

वह सरसों के तेल के दिए की लौ को लोहे के पतरे पर रोक कर इकट्ठा कर लेती थी । मधुमक्खी के छत्ते की भाँति पतरे से लटकी कालिख खुरच वह उसे काँसे के कटोरे में डाल हिरण के उस सींग से घिस-घिस काजल तैयार किया करती थी । वह काजल पूरे डेरों में बँटता था, मासा-मासा ।

घुमक्कड़ों का क्या ठौर ? क्या ठिकाना ? डेरा उठाते-जमाते लछीनाथ से वह सींग कहीं गुम हो गया था । हिरणी के इस सींग को घर लाते जैसे काजल तैयार करती उसकी माँ साक्षात हो गई थीं । उसके मन में विचार घुमड़ा अब वह इसी सींग का घिसा काजल काम में लेगा । उसकी आँखें कम सूझती हैं । वस्तुएँ पकड़ने में दिक्कत होती है । उसने सींग को झोंपड़ी की बाती में खोंस दिया था ।

कुत्ते ने वह छुरा चौक में लाकर पटक दिया था । लछीनाथ ने चौक में पड़ा छुरा उठाया और दूर नाले में फेंक आया ।

—०—

आसपास

अंतरजाल से 'ताड़ोबा अभयारण्य' की जानकारी निम्न मुद्दों के आधार पर प्राप्त कीजिए ।

स्थान | क्षेत्र | विशेषताएँ

7U9F9G

पाठ से आगे

'जंगल के पशु मानवी बस्ती की ओर आ रहे है' इसपर आपके उपायों की सूची बनाइए ।

शब्द संसार

घुमक्कड़ (वि.) = घुमंतू
भानूदय (पुं.सं.) = सूर्योदय
शातिर (पुं.अ.) = चालाक
अंतस (पुं.सं.) = हृदय
लाजिम (वि.अ.) = उचित
सुरमई (वि.फा.) = हल्का नीला रंग

मुहावरे

पलक पाँवड़ा बिछाना = आदरयुक्त स्वागत करना
प्रमुदित होना = आनंदित होना
वशीभूत होना = आधीन होना

रचना बोध

.....
.....
.....

भाषा बिंदु

(१) अलंकार पढ़िए और समझिए :–

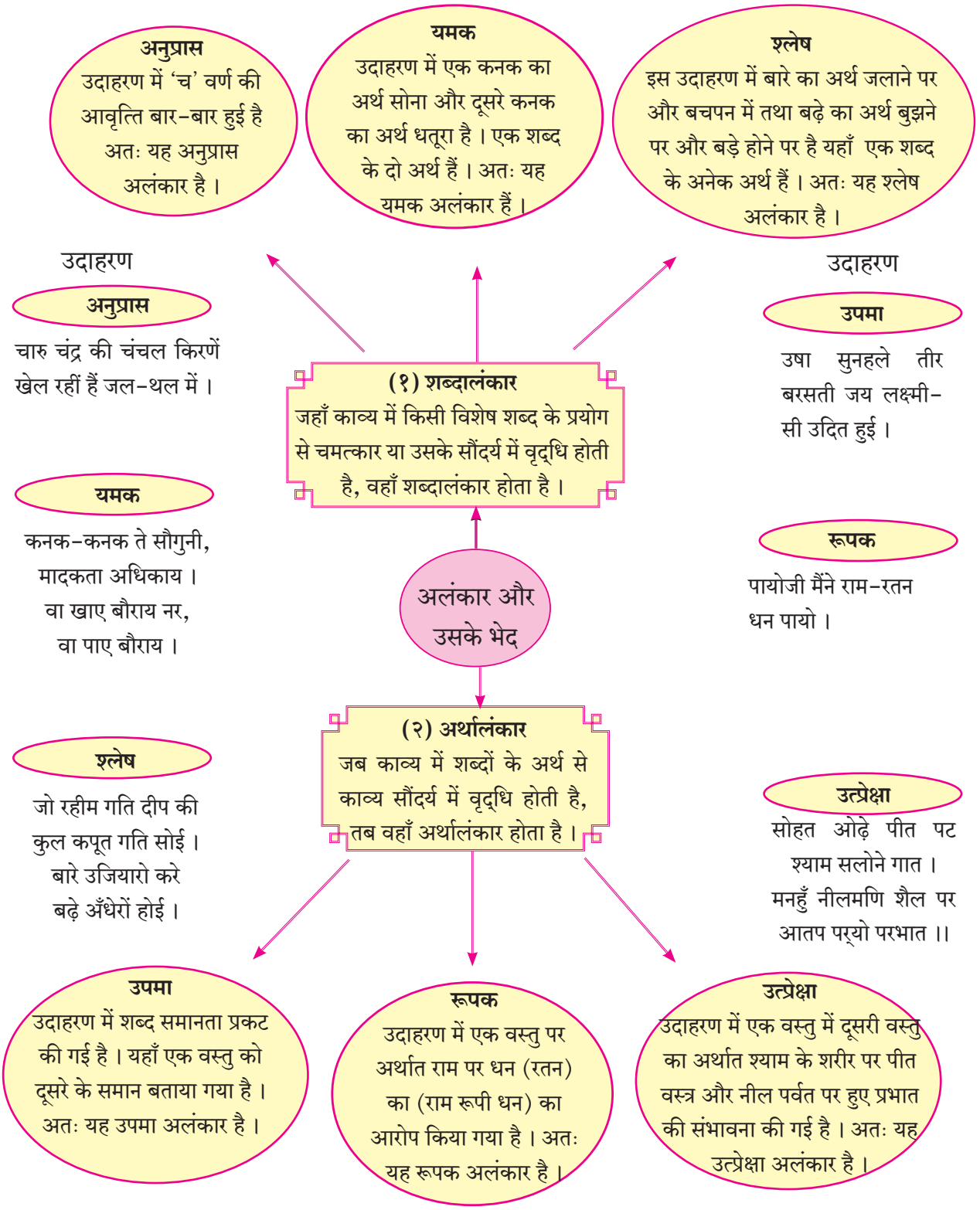

(२) अलंकार के भेदों सहित अन्य एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए ।